सूरज सी होती हैं बेटियां

कमला भसीन

दो साल पहले हमारी युवा साथी रोहिणी की अकाल मृत्यु हो गई। उसके माता-पिता ने उसके काम और आदर्शों को आगे ले जाने के लिए 'रोहिणी गाडियोक फाउंडेशन' की स्थापना की है। इस फाउंडेशन के स्थापना दिवस पर नारीवादी कार्यकर्ता, कमला भसीन के भाषण के कुछ अंश हम आपके साथ बांट रहे हैं।

कमला जी के ये शब्द ऐसी दो युवा बेटियों को उनकी श्रद्धांजलि है जिन्होंने अपने छोटे से जीवनकाल में कुछ प्रेरणादायक काम किए हैं। रोहिणी और मीत्तो (कमला जी की होनहार बेटी जो कुछ वर्षों पहले हमारा साथ छोड़ गई) के जीवन आज की युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरक मिसाल हैं।

"दो गज़ब की बेटियां। कितना कुछ मिलता है उनका। एक हिन्दू कॉलेज से स्नातक तो दूसरी सेंट स्टीफ़ेंस से। दोनों समाज की नाइंसाफ़ी और गैर बराबरी से बेहद नाराज़-परेशान।

दोनों बेकरार दुनिया बदलने को। दोनों में काम करने की जल्दी। कुछ कर गुज़रने की लगन और जुनून। दोनों ही ने मानव अधिकार, सांप्रदायिक सद्भाव और समानता पर काम किया।

जैसा कि आपने सुना ही होगा उन्नीस वर्ष की रोहिणी हर साल छुट्टियों में किसी न किसी गैर सरकारी संगठन के साथ काम करने पहुंच जाती थी। कभी उड़ीसा के ठेठ देहाती क्षेत्र में *ग्राम विकास* से जुड़े आदिवासियों के बीच। तो कभी राजस्थान के पिछड़े इलाकों में उरमूल के साथ काम करने और सीखने। ज़मीनी सच्चाइयों को समझने और उनके साथ जूझने कभी झारखंड तो कभी अजमेर। और ये सब यात्राएं पढ़ाई के दौरान थीं।

फिर हमारे साथ *जागोरी* में तीन साल तक काम किया। वहां हम खूब मिलते थे, इकट्ठा उठते-बैठते थे, गाते थे।

रोहिणी की तेज़ रफ़्तार वाली यात्रा चलती रही। उसे बहुत जल्दी थी- इतना काम जो करना था। रोहिणी की अम्मा हैरान थी- इतने आदर्श और जज़्बात इस लड़की में आए कहां से?

दोस्तों, रोहिणी और मीत्तों को याद करते हुए हमें एक चीज़ ज़रूर याद रखनी चाहिए और वो है ज़िन्दगी और जीने का जुनून। रोहिणी और मीत्तो तुम्हारे अचानक चले जाने से हमें समझ आया कि जीवन एक तोहफ़ा है। हम इसे यूं ही ज़ाया नहीं कर सकते। हम खुशनसीब हैं कि हमें इतने अद्भुत, जोशीले बच्चों के माता-पिता होने का सम्मान और खुशी मिली है। हम यह भी बखूबी समझ गए हैं कि जीवन और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जहां जीवन है वहां मृत्यु भी होगी। इस सच को हमें स्वीकारना ही होगा।

यह देश जहां बेटियों को बड़ी तादाद में मारा जा रहा है, यह शहर जहां दक्षिण दिल्ली की कुछ कॉलोनियों में 1000 लड़कों पर 900 से भी कम लड़कियां रह गई हैं, आइए हम सब बेटियों के चमकते रूप, उनके हुनर के बारे में बात करें, उसका जश्न मनाएं। मैंने तमाम बेटियों के नाम ये कविता लिखी है, इस कविता की प्रेरणा रोहिणी और मीत्तो हैं-

हवाओं सी होती हैं बेटियां
उन्हें चलने में मज़ा आता है।
उन्हें मंजूर नहीं बेवजह रोका जाना।

परिंदों सी होती हैं बेटियां
उन्हें उड़ने में मज़ा आता है
उन्हें मंजूर नहीं परों का काटा जाना।

पहाड़ों सी होती हैं बेटियां
उन्हें सिर उठा जीने में मज़ा आता है
उन्हें मंजूर नहीं सिर झुका कर जीना।

सूरज सी होती हैं बेटियां
उन्हें चमकने में मज़ा आता है
उन्हें मंजूर नहीं हर दम बादलों से ढका होना।